धाम-दर्शन

वर्ष ६ सितम्बर १९८६ अंक ४

सम्पादकीय

श्री कुलजम स्वरूप हमारे धर्म का वह महानतम ग्रंथ है जिसमें प्रकाशित वाणी को हम परमधाम की वाणी मानते हैं। यह हमारी पूजा एवं उपासना का एकमात्र स्वरूप है जिसमें हम स्वयं को अपने प्राण प्रियतम से जुड़े पाते हैं और इस ब्रह्म वाणी की एक-एक चौपाई हमारी मन बुद्धि को जाग्रत करते हुए माया एवं ब्रह्म के भेद समझाते हुए–संसार की समस्त धार्मिक आंस्थाओं का विश्लेषण करते हुए संसार में प्रचलित सभी मान्यताओं का खुलासा हमारे सामने रखती है और हमें पल-पल यह बोध कराती है कि काल माया के इस ब्रह्माण्ड में जिन भौतिक सुखों की हम कामना करते हैं ये मृग तृष्णा के सिवा कुछ भी नहीं–जनम मरण के इस स्वप्न में देखे जा रहे खेल को हम सत्य मानकर स्वयं ही उलझे जा रहे हैं जबकि हमारे कंधों पर तो अपने साथ-साथ मिथ्या जगत के चराचर को जाग्रत व अखण्ड करने की जिम्मेदारी का बोझ डाला गया है। हमें तो समाज व संसार के सामने एक अच्छे, सच्चे, सात्विक एवं धार्मिक आदर्श के रूप में अपने आप को स्थापित करना है और इस ब्रह्म वाणी को, इस अखण्ड वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करना है। शायद यही कारण है कि मन्दिरों, पूजा स्थलों के साथ-साथ हमारे घरों में भी श्री मुखवाणी को दैनिक पूजा के रूप में पढ़ने व चितवन करने का प्रचलन है। हम अपने मौलिक ग्रंथ से अधिक से अधिक सम्बद्ध रहें सम्भवत: इसी उद्देश्य से हमारे समाज में साप्ताहिक पारायणों और फिर इससे भी आगे बढ़ते हुए अखण्ड पाठों की व्यवस्था की गई है–हमारी इस व्यवस्था का सबसे बड़ा गुण यह है कि इन पारायणों को हम स्वयं बाँचते हैं और पाठियों व पुजारियों का सहारा नहीं लेते।

सामाजिक एकता एवं आत्म शुद्धि के उद्देश्य से आयोजित मेलों, भण्डारों तथा महोत्सवों में तो पारायणों की व्यवस्था दिन प्रतिदिन बलवती होती जा रही है और समय-समय पर लगभग प्रत्येक धार्मिक उत्सवों पर किसी न किसी रूप में इस व्यवस्था का आयोजन किया जा रहा है परन्तु इसकी घोषणा करना जितना सरल है, इसे सुचारु और व्यवस्थित ढंग से सम्पूर्ण करना उतना ही कठिन कार्य है विशेषकर जब ऐसा आयोजन

Nijanand App

अखण्ड पारायण के रूप में किया जाता है और जब कोई धार्मिक संस्था १०८ अखण्ड पारायण की घोषणा का साहस करती है तो पहले उसे अपनी जन-शक्ति को झंझोड़ कर देखना पड़ता है, सुन्दर साथ के दिलों से माया के अंधकार को मिटाकर कठिन तप, साधना व तपस्या का बीजा-रोपण करना पड़ता है।

यदि हम अपने सैकड़ों वर्षों से स्थापित एवं प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों की ओर नजर दौड़ाते हैं तो हम पाते हैं कि श्री निजानन्द आश्रम, इन्चोली अपने धर्म के अन्य महानतम स्थानों की तुलना में एक छोटा सा धार्मिक केन्द्र है जिसकी आर्थिक क्षमता एवं जन शक्ति दोनों ही सीमित हैं फिर भी अपनी अनुशासनात्मिक शक्ति, संगठन एवं एकता जैसे गुणों के कारण कुछ ही वर्षों में इसने धार्मिक प्रचार, समाज सेवा व राष्ट्र एकता के ऐसे कार्य कर दिखाये हैं जिससे यह सामान्य सुन्दर साथ की श्रद्धा का एकमात्र केन्द्र बनता जा रहा है और अपनी कुशल योजनाओं एवं सेवाओं के कारण इसका नाम दूर-दूर तक फैल रहा है। इसकी सीमित जन शक्ति में भरपूर श्रद्धा, प्रेम उत्साह व अनुशासन कूट-कूट कर भरा हुआ है और कभी-कभी तो ऐसी अनुभूति होने लगती है कि अपने-अपने विषय या सेवा कार्य के श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को श्री राज जी ने इसी आश्रम के झण्डे तले ला जमा किया है और इस प्रकार सेना में सिपाहियों की संख्या भेड़ों के झुण्ड जैसी न होकर शेरों जैसी प्रतीत होती है और यह जाँबाज़ बाकें सिपाही केवल एक आवाज मात्र पर हर समय अपना तन-मन न्योछा-वर करने को उतावले दिखाई देते हैं। समाज में दुर्भाग्य से एक नेता वर्ग ऐसा भी है जो इसकी लोकप्रियता से भयभीत रहता है और इसे समाज की मूल-धारा से दूर रखने में हर प्रकार के हथ-कण्डों का इस्तेमाल करता है पर शायद वह भूल जाता है कि जब-जब श्रद्धा की बाढ़ उनकी तरह अपनी सीमाओं को तोड़ती है तो मिट जाते हैं नामों निशाँ उनके प्रपंचों के।

तो आतम के आधार प्यारे सुन्दर साथ जी आइए, हमें जो वाणी को श्री १०८ अखण्ड पारा-यण के स्वरूप में अपने रोम-रोम व स्वांस-स्वांस में उतारने का स्वर्णिम अवसर एक बार पुनः आने वाले भण्डारे पर मिल रहा है, हम इसका पूरा-पूरा लाभ उठावें और सतगुरु महिमा का प्रशाद व आर्शीवाद प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य-धन्य बनावें। प्रत्यक्ष दर्शियों का कहना है कि जितनी वाणी एवं जिस व्यवस्थित ढंग से व श्रद्धापूर्ण श्री निजानन्द आश्रम इन्चोली की पावन धरती पर पढ़ी गई या बांची जा रही है इसकी मिसाल कम से कम उनके अपने जीवन में तो और कहीं देखने को नहीं मिलती तो फिर क्यों न इस धाम-धरा की माटी को हम भी अपने माथे का तिलक बना लेवें और परम पूज्य श्री सतगुरु श्री राम रतन दास जी के कण-कण में व्याप्त स्वरूप के दर्शन कर लेवें।

कभी-कभी समाज के शीर्षस्थ वर्ग के लिए कुछ तीखी भाषा का प्रयोग कर जाता हूँ पर मेरी मनषा किसी भी स्थिति में उनका अपमान करने की नही रहती, यह तो मेरी वेदना है, मेरी चाहना और मेरा कर्तव्य—शायद कभी इस प्रार्थना को वह सुन लें, समझ लें तो समाज की जन शक्ति एक ऐसे शक्तिशाली सूत्र में बँध जाएगी जिसकी आवाज गूंज उठेगी चारों दिशाओं में।

———

Nijanand App